Dr. Pragya Rai, Political Science,
Maharaja College
BA-1 Paper-1

राज्य की प्रकृति का मार्क्सवादी सिद्धान्त

मार्क्स ने राज्य को एक संक्रामित और पराश्रयी सामाजिक बल माना। उन्होंने राज्य को सामाजिक विवाद को समाप्त करने वाले और एकता और सामंजस्य लाने वाली किसी नैतिक संस्था के रूप में नहीं माना। मार्क्सवाद के अनुसार राज्य ऐतिहासिक विकास का परिणाम है। मार्क्स एक आम सैद्धान्तिक ढाँचे और इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या में विश्वास करते हैं जिसे द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद (Dialectical Materialism) कहते हैं और इसी के आधार पर ऐतिहासिक भौतिकवाद (Historical Materialism) की व्याख्या करते हैं।

मार्क्सवादी मान्यता के अनुसार राज्य का जन्म समाज के वर्गों के संघर्ष

7 SATURDAY
038-327
Week 6

का परिणाम है। यह समाज के एक प्रभावी वर्ग के हाथों में शोषण का साधन है। राज्य की मदद से शासक वर्ग आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों पर अपनी सत्ता कायम रखते हैं।

प्रश्न — 1- राज्य संबंधी मार्क्सवादी सिद्धान्त को अपने शब्दों में स्पष्ट करें।